

जैमिनीय साम प्रकृति गानम्

॥ अनुक्रमणिका ॥

आग्नेयपाठः

प्रथम खण्डः

॥ गौतमस्यपर्कः ॥	2
॥ कश्यपस्यबर्हिषीयम् ॥	2
॥ गौतमस्यचैवपर्कः ॥	2
॥ सौपर्णञ्च ॥	2
॥ वैश्वमनसञ्चादित्यसामवा ॥	2
॥ श्रौतर्षाणित्रीणि ॥	3
॥ औशनञ्च ॥	3
॥ शैरीषेच ॥	3
॥ इन्द्रस्यसंवर्गौवात्रघ्नेद्वे ॥	3
॥ साकमश्वस्यशौनःशोपेःसामनी द्वे ॥	4
॥ वत्सस्यकाण्वस्यसामनीद्वे ॥	4
॥ अग्रेष्ववैश्वानरस्यार्षेयम् ॥	4
॥ सुमित्रस्यचवार्द्धश्चेस्साम ॥	4

द्वितीय खण्डः

॥ अग्रेष्वसंवर्गः ॥	5
॥ वैश्वमनसञ्च ॥	5
॥ श्राभाश्रौष्टेद्वे ॥	5
॥ वैश्वामित्रञ्च ॥	5
॥ अग्रेष्वजराबोधीये ॥	5
॥ मारूतञ्च ॥	6
॥ भार्गवेच ॥	6
॥ अग्रेष्ववारवन्तीयम् ॥	6
॥ और्वस्यवैधारेस्सामनीद्वे ॥	6
॥ अत्रेश्वासङ्गम् ॥	6
॥ प्रजापतेश्चनिधनकामम् ॥	7

तृतीय खण्डः

॥ सैन्धुक्षितानित्रीणि ॥	8
॥ अग्नेर्हरसीद्वे ॥	8
॥ इहवद्वामदेव्यंतृतीयम् ॥	8
॥ यामेद्वे ॥	9
॥ अग्नेराक्षोघ्नेद्वे ॥	9
॥ वैश्वमनसञ्च ॥	9
॥ अग्रेष्वार्षेयम् ॥	9
॥ सोमसामच ॥	9
॥ गोपवनञ्च ॥	10
॥ सूर्यसामनीद्वे ॥	10
॥ कावञ्च ॥	10
॥ वसुरोचिषस्सौर्यवर्चस्यसामनीद्वे ॥	10
॥ गौराङ्गिरसस्यसामनीद्वे ॥	11

चतुर्थ खण्डः

॥ भारद्वाजस्यौपहवौद्वौ ॥	12
॥ श्रुष्टीगवम् ॥	12

॥ अग्रेष्वयज्ञायज्ञीयम् ॥	12
॥ कार्तवेशञ्च ॥	12
॥ नार्मेधञ्च ॥	12
॥ महाकार्तवेशञ्च ॥	13
॥ भारद्वाजस्यपृथ्वीद्वे ॥	13
॥ उरोराडगिरसस्यसाम ॥	13
॥ गौतमस्यपौरुमुद्वेद्वेपुरुमुद्रस्यवाङ्गीरसस्य देवानांवा ॥	13
॥ मण्डोर्जामदस्यस्यसामनीद्वे ॥	14
॥ भारद्वाजस्यगाधम् ॥	14
॥ गौतमेद्वे ॥	14
॥ अग्रेरायुः ॥	14
॥ अग्रेर्हरसीद्वे ॥	15
॥ दैर्घश्रवसेद्वे ॥	15
पञ्चम खण्डः	16
॥ अग्रेराग्रेद्वे ॥	16
॥ गौतमस्यमनार्येद्वे ॥	16
॥ दैवोराजञ्च ॥	16
॥ गाधिनश्चकौशिकस्यसाम ॥	16
॥ बार्हदुत्थेद्वे ॥	17
॥ पौरुमीढञ्च ॥	17
॥ कार्णश्रवसम् ॥	17
॥ दैवोदासञ्च ॥	17
॥ सौकृतवञ्च ॥	17
॥ काण्वेद्वे ॥	18
॥ मानवेद्वे ॥	18
षष्ठ खण्डः	19
॥ अग्रेष्वद्रविणम् ॥	19
॥ बार्हस्पत्यञ्चब्राह्मणस्पत्यंवा ॥	19
॥ वसिष्ठस्यचवीङ्गम् ॥	19
॥ विस्पर्धञ्च ॥	19
॥ ऐतवृधञ्च ॥	19
॥ मनसश्चदोहः ॥	19
॥ समन्तानित्रिणिअग्रेरेकमिन्द्राग्न्योर्वाप्रजापतेर्वावरुणस्यद्वे ॥	20
॥ वमृस्यवैखानसस्यसाम ॥	20
सप्तम खण्डः	21
॥ श्यावांश्च ॥	21
॥ ऋतुसामनीच ॥	21
॥ यामञ्च ॥	21
॥ अग्रेश्चाग्रेयम् ॥	21
॥ अग्रेर्वैश्वानरस्यसामनीद्वे ॥	22
॥ ऐटतेद्वे ॥	22
॥ वामदेव्यञ्च ॥	22
॥ वैश्यज्योतिषेच ॥	23
॥ यामेद्वे ॥	23
॥ प्रजापतेराशिमरायेद्वेमरायराशिनिवा ॥	23
अष्टम खण्डः	24
॥ श्येनञ्च ॥	24
॥ वासोऋञ्च ॥	24

॥ पौष्णञ्च ॥	24
॥ कौत्सञ्च ॥	24
॥ काश्यपेद्वे ॥	24
॥ घृताचेराङ्गिरसस्यसामनीद्वे ॥	25
॥ भारद्वाजस्यप्रासाहम् ॥	25
नवम खण्डः	26
॥ पार्थेद्वे ॥	26
॥ बृहच्चाग्रेयम् ॥	26
॥ कौन्मुदम् ॥	26
॥ बृहचैवाग्रेयम् ॥	26
॥ कौन्मुदञ्चैव ॥	26
॥ अग्रेर्यद्वाहिष्ठीयेद्वे ॥	27
॥ अग्रेश्चविशोविशीयम् ॥	27
॥ प्रजापतेःकनीनिकेद्वेअत्रेर्वा ॥	27
॥ श्रौतर्वणञ्च ॥	27
॥ कश्यपस्यसयोनिः ॥	28
दशम खण्डः	29
॥ बार्हस्पत्यञ्च ॥	29
॥ ऐषञ्चारूढवदाङ्गिरसम् ॥	29
॥ आसीतेद्वे ॥	29
॥ त्वाष्ट्रीसामच ॥	29
॥ मानवञ्च ॥	29
॥ अगस्तस्यचराक्षोघ्नम् ॥	30
एकादश खण्डः	31
॥ तौदेद्वे ॥	31
॥ दैर्घतमसानित्रीणि ॥	31
॥ श्यावाश्वस्यप्रहितौद्वौ ॥	31
॥ प्रजापतेःश्रुधीयेद्वे ॥	32
॥ प्रजापतेःसदोहविधानानित्रीणिसदःपूर्वहविधाने उत्तरे ॥	32
॥ त्वष्टुश्चातिथ्यम् ॥	32
॥ अदितेश्वसाम ॥	32
॥ अगस्तस्यचराक्षोघ्नम् ॥	33
॥ वाक्वर्जभञ्च ॥	33
॥ बृहदाग्रेयञ्चसङ्कृतंवा ॥	33
॥ अगस्तस्यचैवराक्षोघ्नम् ॥	33
द्वादश खण्डः	34
॥ वसिष्ठस्यप्रमंहिष्ठीयानिचत्वारि ॥	34
॥ भरद्वाजस्यवाजभृत् ॥	34
॥ सौभराणित्रीणि ॥	34
॥ पथस्यसौभरस्यसामनीद्वे ॥	35
॥ दैवानीकञ्च ॥	35
॥ साधञ्च ॥	35
॥ जमदग्रेश्चसंवर्गः ॥	35
॥ अगस्तस्यचराक्षोघ्नम् ॥	35
॥ अग्रेश्चश्रैष्ठ्यम् ॥	35
॥ आदित्यस्यचरुचिरोचनंवा ॥	36

तद्वपाठः	37
प्रथम खण्डः	38
॥ रौद्रेद्वे ॥	38
॥ मार्गीयवञ्चैव ॥	38
॥ आश्वञ्च ॥	38
॥ ऐटतेद्वे ॥	38
॥ श्रौतकक्षेद्वे ॥	39
॥ तन्वस्यपाथस्यसामनीद्वे वसोवर्षेः ॥	39
॥ अङ्गिरसान्निवेष्टौद्वौ इळा नांवासङ्कारौ ॥	39
॥ शय्यातानित्रीणि ॥	40
॥ इन्द्राण्यास्साम ॥	40
॥ गोषूक्तम् ॥	40
॥ आश्वसूक्तञ्च ॥	40
॥ गौरीवितम् ॥	40
॥ गौराणित्रीणि ॥	41
द्वितीय खण्डः	42
॥ सौपर्णानि त्रीणि ॥	42
॥ शाकलम् ॥	42
॥ आभरद्वसवेद्वेऐन्द्राग्नेर्वा ॥	42
॥ तान्वेद्वे ॥	43
॥ रौहितकूलियेद्वे ॥	43
॥ इन्द्राण्यास्सामनीद्वे ॥	43
॥ इन्द्रस्यसहस्रबाहवियम् ॥	43
॥ धृषतोमारूतस्यसामनीद्वे ॥	44
॥ भारद्वाजस्यदारसन्तित्रीणि ॥	44
॥ ऐधमवाहानि त्रीणि ॥	44
॥ अहेःपैण्वस्यसाम अहिहनोवाबैल्वस्य ॥	45
तृतीय खण्डः	46
॥ ऐषञ्च ॥	46
॥ पौषञ्च ॥	46
॥ मरूताञ्चसंवैशीयम् ॥	46
॥ हाविष्मतेद्वे ॥	46
॥ हाविष्कृतेद्वे ॥	47
॥ काक्षीवतञ्च ॥	47
॥ उषसश्च साम ॥	47
॥ भारद्वाजस्यमौक्षेद्वे ॥	47
॥ भारद्वाजानित्रीणि ॥	48
॥ शौक्तसामनीद्वे ॥	48
॥ वार्षाहरेद्वे ॥	48
॥ कूत्सस्यप्रतोदौद्वौ ॥	49
चतुर्थ खण्डः	50
॥ सौश्रवसेद्वे ॥	50
॥ त्वाष्ट्रीसामच ॥	50
॥ त्वष्टुरातिथ्येद्वे ॥	50
॥ पौष्णेद्वे ॥	51
॥ श्यावाश्वेद्वे ॥	51
॥ प्रजापतेस्सुतरयिष्ठीयेद्वे ॥	51

॥ आप्सरसञ्च इष्टाहोत्रीयंवा आपांवानिधि ॥	51
॥ प्रजापतेर्निधन कामम् ॥	52
॥ वाजिदापर्यञ्च ॥	52
॥ सोमापौष्णञ्च ॥	52
पञ्चम खण्डः	53
॥ वैतहव्यानि त्रीणि ॥	53
॥ शौक्तानित्रीणि ॥	53
॥ गौरीवितानित्रीणि ॥	54
॥ काण्वेद्वे ॥	54
॥ सौमित्रेद्वे दैवोदासं तृतीयं श्रौतकक्षाणिवा ॥	55
॥ वैष्णवानि त्रीणि इहद्वाम दैवोदासन्तृतीयं और्ध्वसद्वानिवा ॥	55
॥ औदलेद्वे वैण्वेद्वे वैणव औदलइतीवा ॥	56
॥ दैवोदासानित्रीणिआर्षभाणिवायदिवावार्ध्यश्चानि ॥	56
॥ कौत्सेद्वे पाञ्चवाजेवा ॥	57
॥ सौमेधानित्रीणि पौर्वतिथानिवा ॥	57
॥ दैवातिथम्मैधातिथं वा ॥	57
षष्ठ खण्डः	58
॥ माधूच्छन्दसङ्गौञ्चसौपर्णवा घृतशुन्निधनंआङ्गिरसानिवा ॥	58
॥ प्रैयमेधानित्रीणि शौक्त सामानिवा उत्गातृदमनंवातृतीयम् ॥	58
॥ गौरीवितेद्वे ॥	58
॥ आपालवैण्वेद्वे ॥	59
॥ धुरशम्येद्वे ॥	59
॥ महागौरीवितं तृतीयम् ॥	59
॥ वाचस्सामनीद्वे ॥	59
॥ महावामदेव्यंतृतीयम् ॥	60
॥ इन्द्रस्यसत्रासाहीयेद्वे ॥	60
॥ माहावामदेव्यञ्च ॥	60
॥ वैर्यश्चञ्च ॥	60
॥ गौतमस्यच भद्रम् ॥	60
॥ अश्विनोश्च साम ॥	61
सप्तम खण्डः	62
॥ त्वाष्ट्रीसामच ॥	62
॥ गोधासामच ॥	62
॥ सवितुश्चसाम ॥	62
॥ उषसश्चसाम ॥	62
॥ त्वष्टुरातिथ्येद्वे ॥	62
॥ सौमित्रञ्च ॥	62
॥ इन्द्रस्यचमाया ॥	63
॥ वैश्वामित्रेच ॥	63
॥ शौनश्शेषञ्च ॥	63
॥ प्रतीचीनेषञ्च काशीतम् ॥	63
अष्टम खण्डः	64
॥ सौमित्रञ्च ॥	64
॥ श्यावाश्वेद्वे ॥	64
॥ शैखण्डिनञ्च ॥	64
॥ वैतहव्यञ्च ॥	64
॥ भारद्वाजञ्च ॥	64
॥ अरूणस्यचवैदश्चस्साम ॥	64

॥ सौभरञ्च ॥	65
॥ पाष्ठौहेच ॥	65
॥ साकमश्चन्धुरांवासाम ॥	65
नवम खण्डः	66
॥ यामञ्च ॥	66
॥ आङ्गीरसञ्चइन्द्रस्यवा हरिश्रीर्निधनम् ॥	66
॥ वैरूपञ्च ॥	66
॥ असीतञ्चसिन्धुसामवा ॥	66
॥ यमस्यार्कोद्वौ ॥	66
॥ सौमित्रेद्वे ॥	67
॥ इन्द्रस्याभयम् ॥	67
॥ त्वाष्ट्रीसामनीद्वे ॥	67
॥ इन्द्राण्यास्सामा ॥	67
दशम खण्डः	68
॥ श्यावांश्चञ्च ॥	68
॥ वैरूपञ्च ॥	68
॥ सौमित्रञ्च ॥	68
॥ स्तौभञ्च ॥	68
॥ श्रौतञ्च ॥	68
॥ आभीशवञ्च ॥	68
॥ ऐषञ्च ॥	69
॥ इन्द्रस्यचक्षुरपवी ॥	69
॥ सौमित्रे ॥	69
एकादश खण्डः	70
॥ कौत्सञ्च ॥	70
॥ ऐषञ्च ॥	70
॥ उषसश्चसाम ॥	70
॥ बार्हदुक्थञ्च ॥	70
॥ वरुणसामच ॥	70
॥ उषसश्चैवसाम ॥	70
॥ मित्रावरुणयोश्चसंयोजनम् ॥	71
॥ ऋतुसामच ॥	71
॥ विष्णोश्चसाम ॥	71
द्वादश खण्डः	72
॥ कौत्सञ्च ॥	72
॥ काश्यपञ्चआप्सुरसंवा ॥	72
॥ बार्हदुक्थेद्वे ॥	72
॥ और्ध्वसन्ननेद्वे प्रहितोर्वा संयोजने ॥	72
॥ कौत्सानिचत्वारि ॥	73
॥ अभिवादस्यचऔदलस्यसाम ॥	73
॥ सोमसामच ॥	73
बृहतिपाठः	74
प्रथम खण्डः	75
॥ इन्द्रस्यार्कोद्वौ ॥	75
॥ भारद्वाजेद्वे ॥	75
॥ सन्नतेद्वे ॥	75
॥ शैतन्त्रतीयम् ॥	75
॥ नाविकञ्च ॥	76

॥ प्रजापतेश्चाभीवर्तः ॥	76
॥ भागञ्च ॥	76
॥ इन्द्रस्याभीवर्तः ॥	76
॥ नौधसम् ॥	76
॥ लौशेद्वे ॥	76
॥ धानाकेद्वे ॥	77
॥ कालेयानित्रीणि ॥	77
॥ ऐषिरेद्वे ॥	77
॥ गौश्रृङ्गेद्वे ॥	78
॥ प्रष्ठमेकम् ॥	78
॥ शुक्लएकम् ॥	78
॥ जमदग्रेरभिर्वर्तएकम् ॥	78
॥ कौन्मुलबर्हिषेद्वे ॥	78
॥ वसिष्ठस्यजनित्रेद्वे ॥	79
॥ मैधातिथम् ॥	79
द्वितीय खण्डः	80
॥ वैखानसम् ॥	80
॥ प्राकर्षम् ॥	80
॥ सात्यम् ॥	80
॥ भारद्वाजानिचत्वारि कण्वब्रह्मद्वितीयम् ॥	80
॥ वाम्नाणित्रीणि ॥	81
॥ गौङ्गवम् ॥	81
॥ साध्राणि त्रीणि ॥	81
॥ विरूपस्य समिचीन प्राचीनेद्वे ॥	82
॥ यौक्तास्रजमिन्द्रस्येन्द्रियंवा ॥	82
॥ आत्राणित्रीणि ॥	82
॥ वासिष्ठानित्रीणि ॥	83
॥ वत्सस्यकाण्वस्य सामनीद्वे गौतमस्यवामनार्ये ॥	83
तृतीय खण्डः	84
॥ हारायणानि त्रीणि ॥	84
॥ वाम्नाणित्रीणि ॥	84
॥ वरुणसामानित्रीणि ॥	85
॥ वषट्कारनिधनञ्च साकमश्वम् ॥	85
॥ बृहतश्चमारूतस्यसाम ॥	85
॥ संश्रवसे वीश्रवसे सत्यश्रवसे श्रवस इतिवार्यानां सामानिचत्वारी सांशानानिवा ॥	86
॥ वासिष्ठानि त्रीणि भार्गवं वा तृतीयम् ॥	86
॥ स्ववस आज्ञीकस्यसामनीद्वे ॥	87
॥ काण्वम् ॥	87
॥ वैष्टम्भेद्वे ॥	87
॥ काण्वञ्चैव ॥	87
॥ श्रुष्टिगवञ्च ॥	88
चतुर्थ खण्डः	89
॥ इन्द्रस्यचवृषकम् ॥	89
॥ द्वैगतेच ॥	89
॥ कार्तवेशञ्च ॥	89
॥ इन्द्रस्यच शरणम् ॥	89
॥ श्रायन्तीयञ्च ॥	89

॥ आक्षीलन्चबाभ्रंवा ॥	90
॥ शौक्तानि त्रीणि शुक्लानिवा आश्वानिवा ॥	90
॥ प्रजापतेर्निधन कामम् ॥	90
॥ गौतमस्यमनार्याणित्रीणि ॥	91
॥ वैरूपाणित्रीणि ॥	91
पञ्चम खण्डः	92
॥ पौरूहन्मनञ्च ॥	92
॥ प्राकर्षञ्च ॥	92
॥ इन्द्रस्यचाभयङ्करम् ॥	92
॥ कावर्षेद्वे ॥	92
॥ सूर्यसामच ॥	92
॥ नैपातिथेद्वे वाशेवा ॥	93
॥ कौन्मुदेद्वेस्वर्जोतिषीवा ॥	93
॥ अनूपेद्वे ॥	93
॥ वैरूपञ्च ॥	93
॥ वाचश्चसाम ॥	94
॥ आक्षीलेद्वे ॥	94
षष्ठ खण्डः	95
॥ गौरीवितेःप्रहितौद्वौ ॥	95
॥ आत्रेद्वे ॥	95
॥ गौतमेद्वे ॥	95
॥ वामदेव्यञ्च ॥	96
॥ अश्विनोश्चसाम ॥	96
॥ वसिष्ठस्य वज्राणि त्रीणि ॥	96
॥ सौबभ्रवेद्वे ॥	96
॥ वैर्यश्वम् ॥	97
॥ इन्द्रस्यसहस्रायुतेद्वे प्रजापतेर्वा महोविशीये ॥	97
॥ इन्द्राण्यास्साम ॥	97
सप्तम खण्डः	98
॥ सौभरञ्च ॥	98
॥ गात्समदञ्च ॥	98
॥ वाचश्चसाम ॥	98
॥ बार्हदुक्थञ्च ॥	98
॥ नैपातिथञ्च ॥	98
॥ तौरश्रवसञ्च ॥	98
॥ त्वष्टार्याश्चसाम ॥	99
॥ अदितेश्चसाम ॥	99
॥ आजीक्तञ्च ॥	99
॥ माधुच्छन्दसञ्च ॥	99
अष्टम खण्डः	100
॥ उषसश्चसाम ॥	100
॥ अश्विनोश्चसाम ॥	100
॥ अश्विनोश्चसंयोजनम् ॥	100
॥ अश्विनोश्चैवसाम ॥	100
॥ सोमसामच ॥	100
॥ आजमायवञ्च ॥	100
॥ समुद्रस्यच प्रैयमेधस्य साम ॥	101
॥ वैरूपेच ॥	101
॥ वैश्वदेवञ्च ॥	101

॥ पुरीषञ्चाथर्वणम् ॥	101
----------------------	-----

असाविपाठः	102
प्रथम खण्डः	103

॥ प्राकर्षञ्च ॥	103
॥ वसिष्ठस्यचनिहवम् ॥	103
॥ गृत्समदस्ययोनिनीद्वे ॥	103
॥ औरूक्षयेद्वे ॥	103
॥ पाथेद्वे ॥	104
॥ सौमित्रेद्वे ॥	104
॥ वात्सप्राणित्रीणि ॥	105
॥ वैदन्वतञ्च ॥	105
॥ सौपर्णञ्च ॥	105
॥ यामञ्च ॥	106
॥ ऋतुसामनिच ॥	106
॥ इन्द्रस्यवारवन्तीयम् ॥	106

द्वितीय खण्डः	107
---------------	-----

॥ इन्द्रस्यचक्षुरपविनीद्वे ॥	107
॥ सौरश्मेद्वे ॥	107
॥ बृहतोमारूतस्यसामनीद्वे ॥	107
॥ सोमसामनीद्वे ॥	108
॥ इन्द्रस्यवज्रेद्वे ॥	108
॥ भृष्टिमतस्यस्सौर्यवर्चस्यसामनीद्वे ॥	108
॥ वसिष्ठस्यां कुशौद्वौ ॥	109
॥ भारद्वाजञ्च ॥	109
॥ वासिष्ठञ्च ॥	109
॥ पुरीषञ्चाथर्वणम् ॥	109

तृतीय खण्डः	110
-------------	-----

॥ आदित्याः सामनीद्वे ताक्ष्यसामनिवा ॥	110
॥ इन्द्रस्यचत्रातम् ॥	110
॥ वाक्रतुरम् ॥	110
॥ द्युतानस्य मारूतस्य सामनीद्वे ॥	110
॥ आत्रम् ॥	110
॥ गृत्समदस्यसमिधौदौ ॥	111
॥ वैश्वामित्रम् ॥	111
॥ सावित्राणिषट्त्रैयमेधानिवा ॥	112
॥ कूतिवारस्यवैरूपस्यसाम ॥	112
॥ वामदेव्यम् ॥	113

चतुर्थ खण्डः	114
--------------	-----

॥ शैखण्डिनेद्वे ॥	114
॥ उद्वंशीयन्तृतीयम् ॥	114
॥ शैखण्डिनीत्रीणि ॥	114
॥ आष्टादंष्ट्रेद्वे ॥	115
॥ महावैश्वामित्रेद्वे ॥	115
॥ गृत्समदस्यवीकानिचत्वारिवसिष्ठस्यवाप्रियाणी ॥	116
॥ वसिष्ठस्यवीकानिचत्वारिन्द्रस्यवाप्रियाणिआकूपाराणिवा ॥	116

॥ तिरश्चेराङ्गिरसस्यसामनीद्वेदेवानांवादेवपुरे ॥	117
॥ वैश्वामित्रम् ॥	117
॥ काण्वेद्वे ॥	117
॥ वैश्वामित्रञ्च ॥	117
॥ इन्द्रस्यशुद्धाशुद्धीयेद्वे ॥	118
॥ गौतमस्यरयिष्ठेद्वे ॥	118
पञ्चम खण्डः	119
॥ कौलमलबर्हिषेद्वे ॥	119
॥ नानदन्तृतीयम् ॥	119
॥ शाकपूतञ्च ॥	119
॥ कौलमलबर्हिषेद्वे ॥	119
॥ मधुश्चुन्निधनञ्च प्राजापत्यम् ॥	119
॥ उषसश्चसाम ॥	120
॥ गौतमम् ॥	120
॥ अग्नेश्चदधिक्रम् ॥	120
॥ मारूतंवैश्वामित्रंवा आङ्गीरसानांवा साम मैधातिथंवा ॥	120
षष्ठ खण्डः	121
॥ वामदेव्यञ्च ॥	121
॥ काश्यपञ्च ॥	121
॥ अग्नेर्वैश्वानरस्यसामनीद्वे ॥	121
॥ शाकपूतेद्वे ॥	121
॥ प्रैयमेधञ्च ॥	122
॥ बार्हदुक्थञ्च ॥	122
॥ वरूणान्याश्चसाम ॥	122
॥ उषसश्चसाम ॥	122
॥ देवानाञ्चरुचिरोचनंवा ॥	122
॥ ऋक्सामयोस्सामनीद्वे ॥	122
ऐन्द्रपाठः	123
प्रथम खण्डः	124
॥ त्रैशोकम् ॥	124
॥ शैखण्डिनेद्वे ॥	124
॥ अत्रेर्विवर्त्तोद्वौ ॥	125
॥ महासावेदसेद्वे ॥	126
॥ शैरीषेद्वे ॥	126
॥ इन्द्रस्येन्द्रियाणीत्रिणि ॥	127
॥ वैरूपाणित्रीणि ॥	127
॥ बार्हदुक्थञ्च ॥	127
॥ त्रासदस्यवेच ॥	128
॥ सौभरेद्वे ॥	128
॥ वरूणसामनीद्वे द्यावापृथिव्योर्वासामनी ॥	128
॥ इन्द्रस्यचश्येनः ॥	128
॥ वैरूपम् ॥	129
द्वितीय खण्डः	130
॥ यामम् ॥	130
॥ गृत्समदस्यमदौद्वौ ॥	130
॥ आभीशवेद्वे ॥	130
॥ आभीकेद्वे ॥	131

॥ बार्हगिराणित्रीणी ॥	131
॥ इन्द्रस्यचस्वाराज्यम् ॥	131
॥ कश्यपस्यचधृष्णुम् ॥	131
॥ वैदन्वतम् ॥	132
॥ यामेद्वे ॥	132
॥ त्रैतानित्रीणि ॥	132
॥ सौपर्णेद्वे ॥	132
॥ लौशम् ॥	133
तृतीय खण्डः	134
॥ इन्द्रस्यसञ्चयेद्वे सेनुदेवा वामदेव्येवा ॥	134
॥ अङ्गिरसान्निवेष्टौद्वौ ॥	134
॥ सत्यश्रवसोवार्यश्चसाम ॥	134
॥ उषसश्चसाम ॥	135
॥ लौशञ्च ॥	135
॥ यामञ्च ॥	135
॥ अङ्गिरसाञ्चैवनिवेष्टः ॥	135
॥ गौरयश्चाङ्गिरसस्यसाम ॥	135
चतुर्थ खण्डः	136
॥ वसिष्ठस्यसङ्क्रमौद्वौसौहविषाणित्रीणि सर्वाणिवासौहविषाणि ॥	136
॥ वाकानित्रीणि ॥	136
॥ प्रजापतेर्धर्मविधर्माणिचत्वारि ॥	137
॥ भागञ्च ॥	137
॥ वाजिनाञ्चसाम ॥	137
॥ प्रजापतेर्हिकनिकविकानित्रीणि ॥	137
॥ आश्वेद्वे ॥	138
॥ वाजिनाञ्चसाम ॥	138
॥ आदित्यानाञ्चपवित्रम् ॥	138
पञ्चम खण्डः	139
॥ इन्द्रस्यक्रोशानुक्रोशेद्वे ॥	139
॥ कौत्सन्तृतीयम् ॥	139
॥ प्रहितोःसंयोजनेद्वे ॥	139
॥ दैवोदासेद्वे ॥	139
॥ हारिवर्णानिचत्वारि ॥	140
॥ त्रैतानिचत्वारि ॥	140
॥ सराधसःप्रराधस्यश्चाङ्गिरसयोस्सामानित्रीणि ॥	141
॥ वैश्वमनसम् ॥	141
॥ सौमित्राणित्रीणि ॥	141
॥ त्रैककूभानित्रीणि ॥	142
॥ औक्षोरन्धराणित्रीणिऔक्षोनिधनानिवा ॥	142
षष्ठ खण्डः	143
॥ इन्द्राण्यास्सामनीद्वेइन्द्रस्यवासांवर्त्ते संवर्तस्यवाङ्गीरसस्य ॥	143
॥ दैवोदासानिचत्वारि ॥	143
॥ रेवञ्च ॥	143
॥ आक्षारञ्च ॥	143
॥ रेवञ्चैव ॥	144
॥ आक्षारञ्चैव ॥	144
॥ यामम् ॥	144
॥ भारद्वाजस्यशुन्ध्यु ॥	144

॥ आदित्यानाञ्चापामीवम् ॥	144
॥ वसिष्ठस्यचवैराजे ॥	144
सप्तम खण्डः	145
॥ इन्द्रस्याभ्रातृव्यम् ॥	145
॥ शार्करेद्वे ॥	145
॥ बृहत्कम् ॥	145
॥ सौयवसानिचत्वारिपुनरींलवातृतीयम् ॥	145
॥ मरुताञ्चसंवेशीयंककूभवा ॥	146
॥ इन्द्रस्याभरेद्वे ॥	146
॥ ऐषिराणित्रीणि ॥	146
॥ प्रजापतेस्सीदन्तीयेद्वे ॥	146
॥ पथस्यसौभरस्यसामनीद्वे ॥	147
अष्टम खण्डः	148
॥ वसिष्ठस्याभरेद्वे ॥	148
॥ वासुमन्देद्वे ॥	148
॥ कावर्षाणित्रीणि ॥	148
॥ प्रजापतेःशोकानुशोकानित्रीणि ॥	149
॥ वाचस्सामनीद्वे ॥	149
॥ मरुताञ्चसाम् ॥	149
॥ वैश्वामित्रञ्च ॥	149
॥ मारूतञ्चैव ॥	149
॥ उद्वंशपुत्रञ्च ॥	150
नवम खण्डः	151
॥ धुरशम्येद्वे ॥	151
॥ प्रजापतेर्गूर्दः ॥	151
॥ विश्वामित्रस्यचार्दः ॥	151
॥ प्रजापतेश्चैवगूर्दः ॥	151
॥ विश्वामित्रस्यचैवात्यर्दः ॥	151
॥ प्रजापतेस्सन्तनीकेद्वे ॥	151
॥ प्रजापतेर्धनधर्मेद्वे ॥	152
॥ उषसश्चसाम् ॥	152
॥ वैश्वामित्रञ्च ॥	152
॥ भारद्वाजञ्च ॥	152
॥ इन्द्रस्यचरातिः ॥	152
॥ भारद्वाजञ्चैव ॥	152
॥ इन्द्रस्यचवैराजे ॥	153
दशम खण्डः	154
॥ प्रजापतेर्वाजसनी ॥	154
॥ गौराङ्गीरसस्यसामनीद्वे ॥	154
॥ प्रयस्वच्चप्राजापत्यम् ॥	154
॥ अक्षय्यञ्चरेवत् ॥	154
॥ सवितुश्चसाम् ॥	155
॥ वाक्रतुरञ्च ॥	155
॥ ऐषञ्च ॥	155
॥ यामम्मरूताञ्चसाम् ॥	155
॥ भारद्वाजस्यविषमाणित्रीणि इन्वकंवातृतीयम् ॥	156
॥ पारूच्छेपेद्वे ॥	156
॥ बार्हस्पत्येद्वेअग्नेर्वाराक्षोघ्ने ॥	157

पवमानपाठः	158
प्रथम खण्डः	159
॥ आजीकञ्च ॥	159
॥ आभीकञ्च ॥	159
॥ ऋषभश्चपावमानः ॥	159
॥ आभीकञ्चैव ॥	159
॥ बाभ्रवेद्वे ॥	159
॥ इन्द्राण्यास्साम ॥	159
॥ शैशवेद्वे ॥	160
॥ प्रजापतेर्दोहादोहीयेद्वे ॥	160
॥ इन्द्राण्याश्चैवसाम ॥	160
॥ आमहीयवञ्च ॥	160
॥ आजीकञ्च ॥	160
॥ सूरूपेद्वे ॥	161
॥ जमदग्नेरिशिल्पेद्वे ॥	161
॥ संहितञ्च ॥	161
॥ वसिष्ठस्यशकूनः ॥	161
॥ जमदग्नेश्चगम्भीरम् ॥	161
॥ संहितञ्चैव ॥	162
॥ सोमसामनीद्वे ॥	162
॥ आशुभार्गवंतृतीयम् ॥	162
॥ वैश्वदेवेद्वे ॥	162
॥ इन्द्रसामनीद्वे ॥	163
॥ यौक्ताश्चेद्वे ॥	163
॥ भासञ्च ॥	163
॥ सोमसामच ॥	163
॥ प्रजापतेश्चसहोरयिष्ठीयम् ॥	163
॥ मादिलम् ॥	164
॥ सोमसामचैव ॥	164
॥ प्रजापतेश्चैवसहोरयिष्ठीयंसोमसामवा ॥	164
॥ वैष्टम्भेद्वे ॥	164
॥ पाष्ठौहेद्वे ॥	164
॥ वैष्टम्भञ्चैव ॥	165
॥ पाष्ठौहञ्चैव ॥	165
॥ इषोवृधीयञ्च ॥	165
॥ इन्द्रसाम ॥	165
॥ वैश्वदेवेच ॥	165
॥ इन्द्रसामचैव ॥	166
॥ आग्नेयानित्रीणि ॥	166
॥ आश्वानिचत्वारि ॥	166
॥ च्यावनानिचत्वारि ॥	167
॥ प्राजापत्येद्वे ॥	167
॥ वैदन्वतानिचत्वारि ऋषभोवावैदन्वतश्चतुर्थः ॥	168
॥ रजेराङ्गीरसस्यपदस्तोभौद्वौ ॥	168
॥ और्णायवेद्वे ॥	168
द्वितीय खण्डः	169
॥ सौभरेद्वे ॥	169
॥ इन्द्रस्यवृषकाणित्रिणि ॥	169

॥ बभ्रोःकुम्भस्यसामानित्रीणि ॥	169
॥ बभ्रोःकार्तवेशानित्रीणि ॥	170
॥ शाम्मदे द्वे ॥	170
॥ वसिष्ठस्यजनित्रेद्वे ॥	170
॥ मरूताम्प्रकीळास्त्रयःसङ्कीळावानिक्लिळावा ॥	171
॥ औशनम् ॥	171
तृतीय खण्डः	172
॥ यामानित्रीणि ॥	172
॥ अङ्कतेवैररूपस्यसाम ॥	172
॥ औशनेच ॥	172
॥ सोमसामच ॥	172
॥ कार्णोच ॥	173
॥ भारद्वाजश्च ॥	173
॥ वैश्वामित्रश्च ॥	173
॥ इन्द्रस्यवात्रघ्नम् ॥	173
॥ सोमसामानित्रीणि ॥	174
॥ भारद्वाजश्चैव ॥	174
चतुर्थ खण्डः	175
॥ वार्षाहरम् ॥	175
॥ वार्षानित्रीणि ॥	175
॥ वैरूपेचदेवानांवाञ्जसायिनी ॥	175
॥ तरन्तस्यचवैददश्चेस्साम ॥	175
॥ सोमसामच ॥	176
॥ सूर्यसामच ॥	176
॥ दाढ्यच्युतानित्रीणि ॥	176
॥ इन्द्रस्यचवृषकम् ॥	176
॥ ऐषश्च ॥	176
॥ श्यावाश्वश्च ॥	177
॥ सोमसामच ॥	177
॥ आग्नेयश्च ॥	177
॥ आयास्येच ॥	177
॥ भारद्वाजश्च ॥	177
पञ्चम खण्डः	178
॥ आयास्यश्च ॥	178
॥ वसिष्ठस्यचापदासे ॥	178
॥ माण्डवश्च ॥	178
॥ उद्वच्च ॥	178
॥ माण्डवश्चैव ॥	178
॥ प्रजापतेश्वसदोविशीयम् ॥	179
॥ जमग्नेस्सवासिनी द्वे ॥	179
॥ आयास्येद्वेसोमसामनीवा ॥	179
॥ कण्वरथन्तरम् ॥	179
॥ आयास्यश्च ॥	180
॥ रौरवम् ॥	180
॥ यौधाजयश्च ॥	180
॥ वसिष्ठस्यचप्लवम् ॥	180
॥ अच्छिद्रश्च ॥	180
॥ रयिष्ठश्च ॥	181
॥ भारद्वाजेद्वे ॥	181

॥ आभिषवेद्वे ॥	181
॥ अङ्गिरसामधीवासपरीवासौद्वौ ॥	182
॥ माण्डवेद्वे ॥	182
॥ वैनसोमकृतवेद्वे ॥	182
॥ प्रजापतेर्गूदौद्वौ गौतमस्यवाप्रतोद्वौ ॥	183
॥ मरूताङ्गोष्ठापुंसिनिद्वे ॥	183
॥ महारौरवञ्च ॥	183
॥ महायौधाजयञ्च ॥	184
॥ आश्वानिचत्वारि ॥	184
॥ आग्नेयञ्च ॥	184
॥ सोमसामच ॥	185
॥ द्विहिङ्गारञ्चवामदेव्यम् ॥	185
॥ अङ्गिरसामुत्सेधनिषेधौ द्वौ ॥	185
॥ सोमसामानिषट् ॥	186
॥ विष्णोररणीद्वे ॥	186
॥ आङ्गिरसानित्रीणि ॥	187
॥ औक्ष्णोरन्ध्राणित्रीणि ॥	187
॥ औक्ष्णोनिधनानित्रीणि ॥	188
॥ वाजजिञ्चा ॥	188
॥ द्वभ्यासञ्चसौहविषं वसिष्ठस्यवापिप्पलि ॥	188
॥ वैश्वदेवेच ॥	188
॥ इन्द्रसामच ॥	189
॥ वैश्वदेवञ्चैव ॥	189
॥ इन्द्रसामानित्रीणि ॥	189
॥ स्वःपृष्ठमाङ्गिरसम् ॥	189
॥ सोमसामच ॥	189
॥ आदित्यानाञ्चपवित्रम् ॥	190
॥ सोमसामनीद्वे ॥	190
॥ स्वःपृष्ठञ्चैवाङ्गिरसम् ॥	190
॥ सोमसामचैव ॥	190
षष्ठ खण्डः	191
॥ औशनानित्रीणि ॥	191
॥ प्रशस्यजानस्याभीवर्तौद्वौ ॥	191
॥ प्रजापतेर्वाजसनिनीद्वे वाजजितौद्वौ वाराहाणिवा ॥	192
॥ अङ्गिरसांसङ्गोशास्त्रयः देवानांवा सामसुरसे द्वे ॥	192
॥ वेणोर्विशालेद्वे ॥	193
॥ गौतमस्यतन्त्रातन्त्रेद्वे ॥	193
॥ अगस्तयस्ययमिकेद्वे ॥	193
॥ मरूताङ्गालकाक्रन्तौ ॥	194
॥ वासिष्ठानिषट् ॥	195
॥ आश्वञ्च ॥	196
॥ सोमसामनीद्वे ॥	196
॥ ऐषञ्च ॥	196
॥ मोधुच्छन्दसम् ॥	196
॥ सोमसामानिचत्वारि ॥	197
॥ मरूतां व्रतोपोहस्सम्पद्वा ॥	197
सप्तम खण्डः	198

॥ कूत्सस्याधिरथ्यानित्रीणि ॥	198
॥ वैश्वज्योतिषाणित्रीणि ॥	198
॥ वाचस्सामनीद्वे ॥	199
॥ दाशस्पत्यानिषट् ॥	199
॥ कश्यपस्यचशोभनम् ॥	200
॥ आत्रम् ॥	200
॥ अपांसाम् ॥	200
॥ श्रौष्टाणित्रीणि ॥	200
॥ वासिष्ठम् ॥	201
अष्टम खण्डः	202
॥ नकूलस्यवामदेवस्यप्रेखौद्वौ ॥	202
॥ महाकार्तृवेशञ्च ॥	202
॥ और्ध्वसन्ननञ्च ॥	202
॥ श्यावाश्वञ्च ॥	202
॥ आन्धीगवञ्च ॥	202
॥ क्रौञ्चानित्रीणि ॥	203
॥ गृत्समदस्यसूत्राणि चत्वारि ॥	203
॥ आकुपारम् ॥	204
॥ त्वाष्ट्रीसामनीद्वे ॥	204
॥ सोमसामानिचत्वारि वासिष्ठानिवा मदाईनिधनानिवा त्वाष्ट्रीसामानी ॥	204
॥ त्वाष्ट्रीसामनीचैव ॥	205
॥ क्रौञ्चेद्वेशर्मदेवा ॥	205
॥ सोमसामानि त्रीणि ॥	205
॥ क्रौञ्चैव उद्वद्ववा ॥	205
॥ सोमसामचैव ॥	206
॥ प्रैय्यमेधानि त्रीणि ॥	206
॥ औशनंवैरूपम् ॥	206
नवम खण्डः	207
॥ कावम् ॥	207
॥ प्रजापतेर्वाजसनिनीद्वे ॥	207
॥ वाजिजितौद्वौ ॥	208
॥ कावञ्चैव ॥	208
॥ सामराजानित्रीणि विशालानिवा उद्वन्तिवा सम्पद्वा तृतीयम् ॥	209
॥ आङ्गीरसानित्रीणि ॥	209
॥ औशनम् ॥	209
॥ प्रवत्भार्गवम् ॥	210
॥ विरूपस्यचतन्त्रे ॥	210
॥ भार्गवञ्चैव ॥	210
॥ यामम् ॥	210
॥ दार्शरीषेद्वे ॥	211
॥ सैन्धुक्षितानित्रीणि ॥	211
॥ यामानित्रीणि ॥	212
॥ मरूतान्धेनुनीद्वे ॥	212
॥ वसिष्ठस्यापामीवेद्वे वायोर्वाभिकृन्दौ ॥	212
॥ अञ्जतेव्यञ्जतेस्समञ्जतइति काक्षीवतानांसामानि त्रीणि शार्ङ्गाणिवा ॥	213
॥ आदित्यस्यार्कपुष्पे देवानांवा ॥	213
दशम खण्डः	214
॥ वसिष्ठस्यपदेद्वे ॥	214

॥ वसिष्ठस्यानुपदेद्वे ॥	214
॥ पौष्कलम् ॥	214
॥ ऐषिराणिपञ्च ॥	215
॥ शौक्तानिपञ्च ॥	216
॥ कार्णश्रवसानित्रीणिगौलोमानिवा ॥	216
॥ वैश्वदेवेद्वे ॥	217
॥ इन्द्रसामनीद्वे ॥	217
॥ मरूताम्प्रेङ्खःवसिष्ठस्यवा ॥	217
॥ आग्नेयञ्च ॥	217
॥ सोमसामच ॥	217
॥ सुज्ञानेद्वे ॥	218
॥ द्यौतेद्वे ॥	218
॥ आतीषातीयेद्वे ॥	218
॥ सोमसामानिचत्वारि ॥	219
॥ सोमस्ययशांसित्रीणि ॥	219
॥ औशनंवासिष्ठंवा ॥	219
एकादश खण्डः	220
॥ वासिष्ठेद्वे ॥	220
॥ सभानित्रीणि ॥	220
॥ ऐषिराणिचत्वारिच्यावनानिवा ॥	221
॥ शौक्तानित्रीणि ॥	221
॥ वाचस्सामानित्रीणि ॥	222
॥ कौन्मलबर्हिषाणिपञ्च शंकुतृतीयंसीदन्तीयंवा तृतीयेतराणिपञ्चा त्यर्थः ॥	222
॥ दीर्घेद्वे ॥	223
॥ सोमसामानित्रीणि ॥	223
॥ शैतेष्याणिचत्वारि ॥	223
॥ सोमसामानित्रीणि ॥	224
॥ गायत्रपार्श्वञ्च ॥	224
॥ सन्तनिच ॥	224